International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(3): 32-34

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(3): 32-34
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 27-03-2019
Accepted: 29-04-2019

**डा.मोना बाला**
एम.ए.(संस्कृत), पी–एच.डी सहायक प्रध्यापक, (गेस्ट फैकल्टी), स्नातकोत्तर विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

**Correspondence**
**डा.मोना बाला**
एम.ए.(संस्कृत), पी–एच.डी सहायक प्रध्यापक, (गेस्ट फैकल्टी), स्नातकोत्तर विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

# राम कथा का वैश्विक प्रसार

## डा.मोना बाला

**प्रस्तावना**

भारत वर्ष में रामायण एक महत्त्वपूर्ण काव्य है। आदि काव्य होने से इसमें काव्य की धारा निश्च्छल रूप में प्रवाहित होती रहती है। रामायण को राष्ट्रीय महाकाव्य कहा जाए तो इसमें अतिशयोक्ति न होगी। इस विशद् ग्रन्थ में एक ही फलक पर व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक आदर्शों का समिश्रण प्राप्त हो जाता है। यह काव्य एक महामानव की उज्ज्वल गाथा का प्रकटीकरण है। राम का नायकत्व इस कारण भी विशेष महत्त्व का माना जाता है क्योंकि उन्होंने एक साथ जहाँ दलित–पीड़ित वर्गो के प्रति कारूण्य प्रदर्शित किया वहीं दूसरी ओर दानवी शक्तियों के प्रति क्रूर एवं प्रचण्ड विरोध दिखाया। वाल्मीकि ने एक स्थल पर राम के गुणों का बखान करते हुए कहा है–

रामः सत्परूषो लोके सत्यः सत्यपरायणः ।
सक्षाद् रामाद् विनिर्वृतो धर्मश्चापि श्रिया सह ।। [1]

भारतीय वाड्.मय में वाल्मीकि रामायण अन्य कितने काव्य की प्रेरणा स्थली बनी। वास्तव में काव्य इतना प्रभावशाली है कि चाहे जितनी बार इसे पढ़ा–लिखा अथवा सुना जाए इसके सम्मान में श्रीवृद्धि ही होती है। रामायण एक महान उपजीव्य काव्य है।

रामकथा का प्रभाव एवं प्रसार भारतीय वाड्.मय को समृद्ध एवं सुशोभित करने वाला रहा है। संस्कृत भाषा में श्रीमद्भागवत पुराण, स्कन्ध पुराण, पद्म पुराण एवं महाभारत के वनपर्व में भी राम कथा उपलब्ध है। रामायण को उपजीव्य मानकर संस्कृत साहित्य में कालिदास कृत रघुवंशम्, कुमारदास कृत जानकीहरण, प्रवरसेन कृत सेतुबन्ध, भट्टि कृत भट्टि काव्य, क्षेमेन्द्र कृत रामायण म×जरी, वामनभट्ट वाण कृत रधुनाथाभ्युदय, भास कृत अभिषेक और प्रतिमा नाटक, भवभूति कृत महावीरचरित और उत्तररामचरित, मुरारि कृत अनर्घराघव, राजशेखर कृत बालरामायण, जयदेव कृत प्रसन्नराघव, भोज कृत रामायण चम्पू की रचना हुई, ये ग्रन्थ अपना महत्त्व रखते हैं।

आठवीं–नवी शती में प्राकृत में पउम चरिउ की रचना की। 12वीं शती में कम्ब–कृत रामायण की रचना की गई। कम्ब रामायण वैसे तो वाल्मीकि की ही राम कथा का अनुशरण हुआ है। इस कथा को दक्षिण में एक पवित्र ग्रन्थ के रूप में स्थान प्राप्त है वैसे इसमें कम्ब के द्वारा पर्याप्त परिवर्त्तन भी दिखाई देते हैं।

'अध्यात्म रामायण' एक अत्यंत प्रभावशाली रचना है जिसका प्रभाव अवान्तर राम कथा पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इसमें श्रीराम को चतुर्भुजधारी रूप में जन्मा बताया गया है। समस्त कथा शिव–पार्वती चर्चा के द्वारा प्रदर्शित है। राम नाम के महत्त्व को बताने के लिए कथा में वाल्मीकि के द्वारा राम का उल्टा नाम लेने पर भी महिमा का वर्णन प्रस्तुत होता है। राम के द्वारा सेतुबन्ध के पूर्व शिवर्लिं की स्थापना तथा पूजा–याचना वर्णित है जो इस रामायण को वाल्मीकि कृत रामायण से अलग करता है। इस ग्रन्थ में उपलब्ध रामहृदय तथा रामगीता अत्यन्त प्रभावशाली कृति है। अध्यात्म रामायण का प्रभाव एकनाथ के मराठी राम–कथा तथा गोस्वामी तुलसीदास की रामचरितमानस पर स्पष्ट दिखाई देता है। इसकी रचना 13वीं–14वीं शती में रामानन्द सम्प्रदाय के अन्तर्गत रची गयी मानी जाती है। रामानन्दी सम्प्रदाय में इस ग्रन्थ की बड़ी मान्यता है, जो इस ग्रन्थ के प्रभाव का साक्षी है।

'अद्भूत रामायण' इसमें राम कथा में कई स्थलों पर अद्भूत वर्णन उपलब्ध होता है। इस रामायण में सीता जन्म की अद्भूत कथा वर्णित है। अद्भूत रामायण के अन्तिम सर्गो में सीता का काली रूप धारण कर सहस्त्रस्कन्ध रावण के वध की विस्मय करने वाली कथा वर्णित है। अद्भूत रामायण के 25वें सर्ग में श्रीराम द्वारा जनकी जी की सहस्त्रनाम से स्तुति की गई है। भारत के कई स्थलों में अद्भूत रामायण की लोकप्रियता व्याप्त है। इसमें राम और सीता को अभेद बताते हुए कहा गया है–

रामः साक्षात् परं ज्योतिः परं धाम परः पुमान् ।
आकृतौ परमो भेदो न सीतारामयोर्यतः ।। [2]

'आनन्द रामायण' एक बृहत्काय रामायण है। इस पर अध्यात्म रामायण का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है जिससे यह स्पष्ट ही है कि इसकी रचना आध्यात्म रामायण के उपरान्त की ही रही होगी। इस में बारह हजार दो सौ बावन (12,252) श्लोक हैं। कथा शिव–पार्वती वार्त्ता के द्वारा कही गई है। इसमें सार–काण्ड, यात्रा–काण्ड, विलास–काण्ड, जन्म–काण्ड, विवाह–काण्ड, राज्य–काण्ड, मनोहर–काण्ड, पूर्ण–काण्ड उपस्थित हैं। आनन्द रामायण में राम के ब्रह्म रूप के प्रतिपादन के साथ उपासना विधि के महत्त्व की चर्चा है। इस रामायण में कहीं–कहीं भक्ति की अतिशयता में कुछ अजीव वर्णन भी है। इसमें राम की मनोहारी स्तुति की गई है–

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् ।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमंडितम् ।। [3]

'तत्त्वसंग्रह रामायण' की रचना राम के ब्रह्म रूप के प्रतिपादन हेतु हुई। यह अद्वैत रामोपासना का मंत्र 'रामोऽहम्' इसी में प्रतिपादित है। यह 17वीं सदी की रचना है।
'भुशुण्डि रामायण' भी राम भक्ति उपासकों में अपना एक विशेष स्थान रखता है। इसे आदिरामायण तथा महारामायण के नाम से भी अभिहित किया जाता है। इस रामायण में भागवत कथा का पूर्ण प्रभाव दृष्टिगत होता है। इस रामायण में राम का चित्रकूट में गोप–गोपिकाओं के साथ रासक्रीडा वर्णित है। [4]
रामायण पर नीलकण्ठ जो महाभारत ग्रन्थ के टीकाकार भी थे, उन्होंने रामपरक मन्त्र की रचना की जो 'मन्त्र रामायण' के नाम से जाना जाता है।
रामायण पर हर भाषा में रचना हुई। तेलगु में 13वीं–14वीं शती में 'रंगनाथ रामायण' की रचना हुई। 'असमीया रामायण' की रचना 15वीं शती में हुई। बंग्ला–रामायण की रचना 15वीं शती में हुई। कन्नड़ भाषा में रचित 'तोरवे रामायण' की रचना 1500–1600 ई. के मध्य हुई। मलयालम भाषा में भी अध्यात्म रामायण की रचना हुई जिसका काल 16वीं शती मान्य है। उड़िया रामायण 16वीं शती, 'भावार्थ रामायण', जो कि मराठी भाषा में विरचित है जिसका काल 16वी शती है। गुजराती रामायण 19वी शती, पंजाबी रामायण 19वी शती तथा नेपाली रामायण 19वी शती में लिखी गई। स्पष्ट है कि प्राचीन से आधुनिक काल तक रामायण कथा की लोकप्रियता बनी रही। इन सभी रामायण पर वाल्मीकि कृत रामायण का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। मूल रूप से वाल्मीकि रामायण को आधार बना कर अन्य भाषाओं में निर्बाध रूप से रचनाएँ होती रही तथा लेखक राम कथा की लोकप्रियता से आह्लादित होते रहे। लेखकों ने अपने अनुसार कथा में कुछ परिवर्त्तन अवश्य किए किन्तु भारतीय जनमानस द्वारा उन्हें भी स्वीकार कर लिया गया, यह राम कथा की लोकप्रियता का साक्षात् प्रमाण है।
उत्तर भारत में गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित–मानस की लोकप्रियता अद्वितीय है। तुलसीदास ने भी वाल्मीकि रामायण को ही आधार बनाया तथा राम के परब्रह्म स्वरूप की स्थापना करते हुए अपनी रचना की। तुलसीदास के आराध्य एवं ईष्ट राम हैं इस कारण रामचरितमानस राम भक्त में अपना विशिष्ठ स्थान रखता है।

रामराज बैठ त्रय लोका । हरषित त्रये गये सब शोका ।।
वयरू न कर काछु सज कोई । रामप्रताप विषमता खोई ।। [5]

तुलसी के पात्र अपेक्षाकृत अन्य रामायणों के पात्र से अधिक संयमी हैं। तुलसीदास ने नारी पात्रों के चरित्र का रक्षण भली–भांति किया है। गोस्वामी ने राम के महामानव तथा ब्रह्मनत्व का बड़ा सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है। उनके काव्य की यह विशेषता भी है। गोस्वामी तुलसीदास ने राम कथा का प्रसार जन–जन तक कर दिया। बहुत अवसरों पर व्यक्ति तुलसीकृत रामचरितमानस को ही आदि रामायण समझ बैठते हैं। जो भी हो गोस्वामी तुलसीदास ने बड़े ही सरल एवं चारू पदों की रचना की है उनके दोहों में मानों चमत्कार ही छिपा है जो किसी भी सामान्य मानव में स्फूरण का संचार कर देता है।
सभी रामायणों के लेखकों ने अपने अनुसार परिवर्त्तन किए लेकिन रामकथा की चारूता सदैव बनी रही है। वाल्मीकि के द्वारा रामायण की रचना संस्कृत भाषा में की गई थी समय के साथ संस्कृत जन भाषा नहीं रही तब इन लेखकों के द्वारा रचित रामायण ही सामान्य जन के निकट राम कथा तथा भक्ति का एक मात्र माध्यम बनी। कुछ भाषाओं में उपलब्ध रामायण के परिवर्त्तन जन–सामान्य को अच्छे भी लगते है तथा इनसे प्रेरणा भी मिलती है।
भाषा रामायणें यद्यपि भक्ति परक रही है परन्तु गोस्वामी तुलसीदास के अतिरिक्त किसी ने भी राम को परब्रह्म नहीं अपितु उन्होंने राम को विष्णु अवतार ही स्वीकार किया है। [6] हिन्दी साहित्य में राम संबंधित रचनाएँ भरी पड़ी है जो आध्यात्मिक सुख देती हैं। पूर्वाचल रामायणों में राम को कृष्ण रूप में भी देखने की बात सामने आती है। उड़िया रामायण में राम को युद्ध के समय भेजे गए रथ का नाम नंदी–घोष रथ है, जो वस्तुतः जगन्नाथ स्वामी के रथ का नाम है।
भाषायी रामायणों में परिवर्त्तन का मूल उद्देश्य चरित्रों को कलंक मुक्ति भी मानी जा सकती है कई रामायण में भरत की जननी की चरित्र रक्षण हेतु कथा गढ़ी गई है। बंग्ला रामायण में मंदोदरी के द्वारा सीता को शाप दिया गया है कि राम उन्हें स्वीकार नहीं करेगें। वास्तव में निजी दृष्टिकोणों की बहुलता भी भाषायी रामायण के लिए न्यास है।
राम कथा भारत की साहित्यिक भाषाओं में ही नहीं अपितु जन–जन की भाषा में भी राम–सीता की मार्मिक कथा व्याप्त है। किसी भी बोली के लोक–गीत में राम व्याप्त हैं, गीत विरह का हो अथवा संयोग का दोनों में ही राम व्याप्त हैं। राम–सीता के मार्मिक प्रसंग लोकगीतों को जीवन्त कर जाती है। कुछ गीतों में पूर्ण भावनात्मक एवं आत्मीयता के साथ राम–सीता का चित्रण है जो मन को मोहता है और लोकगीत का सौन्दर्य बढ़ाता है। [7]
भारत वर्ष में उपलब्ध कई जनजातियों की कथा में राम व्याप्त हैं। वन्य जातियों ने भी पूर्ण श्रद्धा के साथ राम की भक्ति की है। 'जुआंगों' की स्त्रियाँ रात–भर नग्न रहती हैं इसका कारण वह यह बताती है कि एक बार उन्हें अपने सुन्दर वस्त्रों पर बड़ा गर्व हो गया था इस पर सीता ने उन्हें नग्न रहने का शाप दे दिया। परजा और गौंड जनजातियाँ भी अपने नग्न रहने का कारण इस प्रथा का बताते हैं। कोल जनजाति अपने आप को शबरी से जोड़ते हैं तथा राम पर अपार श्रद्धा भक्ति रखते हैं। माड़िया जनजाति सीता को देवी रूप में पूजते हैं। केरल की एक जनजाति स्वयं को शूर्पनखा का वंशज मानते हैं। मध्यप्रदेश की एक जनजाति के अनुसार राम उनके साथ झूम की खेती करते हैं। केरल की एक जनजाति अपने को गौतम और अहल्या का वंशज मानते हैं। [8]
रामकथा का प्रसार न केवल भारत में अपितु कई अन्य राष्ट्र में उपलब्ध है। कम्बोज में यह प्रथा है कि राजवंशीय लोग रामायण के पात्रों का अभिनव करें अभी भी राजकुमारी द्धारा ही सीता का अभिनय किया जाता है जो उनकी श्रद्धा का परिचायक है। राम–कथा बर्मा(म्यंमार), श्रीलंका, लाओस, मलेशिया, फिलीपीनस, मंगोलिया, चीन, जापान, तिब्बत, खेतान आदि एशियाई देशों में पहुँच चुकी है। पं. रामनाथ त्रिपाठी ने अपने लेख में यह बताया है कि इण्डोनेशिया में बौद्ध एवं मुसलमानों के विवाह में भी रामायण का कोई दृश्य प्रस्तुत किया जाता है। [9]
राम कथा का आकर्षण इतना रहा है कि न की भारत में अपितु अन्य देशों में भी इतनी चर्चा अपने उत्कर्ष पर रही है। चीन में राम–कथा को भ्रमण का इतिहास सर्वाधिक प्राचीन है। यहाँ बौद्ध ग्रन्थों के चीनी अनुवाद के द्वारा राम कथा प्रविष्ट हुई है। एक तो

जातक है उसका नाम अनामकं जातकम् है जिसके चाना अनुवाद का नाम कांग–सेंग–हुई है इस जातक में राम कथा के पात्रों का नाम स्थान तो नहीं मिलता है परन्तु कथा राम की ही है। दूसरे ग्रन्थ का नाम है 'दशरथ कथानम्' जो त्रिपिटक जो बौद्ध धर्मग्रन्थ है, के अन्तर्गत त्सा–पौ–त्संगकिंग के नाम से उपलब्ध है। इस ग्रन्थ में रामायण के सभी पात्र मिलते हैं। परन्तु सीता का नाम प्राप्त नहीं होता है।

तिब्बती भाषा में रामकथा 8वीं–9वी शताब्दी के आस–पास की है। तुन–हुआँ नामक स्थान पर हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त होती है। आचार्य बलदेव उपाध्याय बताते हैं कि तिब्बती रामायण का मूल वाल्मीकि पर आधारित न होकर किसी अज्ञात भारतीय कथा पर आधृत है। [10] इस कथानक का वैशिष्टय उत्तर पुराण तथा कथासरित्सागर प्रतीत होता है। [11] तिब्बती रामकथा में कुछ नाम मूल संस्कृत के समान है तो कुछ नाम तिब्बती है, जैसे– मरूत्से (मरीच)। तिब्बती रामकथा में राम और लक्ष्मण दो ही भाई बताएँ गए है, ऐसे ही कई परिवर्त्तन दृष्टिगोचर होते हैं।

खोतानी (पूर्वी तर्किस्तान) की रामकथा 9वीं शताब्दी की मान्य है। इस रामकथा की अनेक बातें तिब्बती रामकथा से मिलती–जुलती है परन्तु यह तिब्बती रामकथा पर आधृत नहीं है। इस रामकथा में राम और लक्ष्मण दोनों ही सीता के साथ विवाह करते है। यह वर्णन सम्भवतः वहाँ उपस्थित बहुविवाह प्रथा के कारण वर्णित रही होगी।

जावा में रामकथा बहुत पहले पहुँच चुकी थी। 9वीं शती के पाषाण शिव मन्दिर में रात विषयक चित्रलिपियाँ मिलती हैं। इसके अलावा जावा की प्राचीन रचना रामायण काकविन है जिसपर भट्टिकाव्य का विपुल प्रभाव दिखाई पड़ता है। इस ग्रन्थ के अलावा तीन ग्रन्थ प्राप्त होते हैं जिसका सम्बन्ध रामकथा से है– 1.सुमन सांतक कोकविन, 2.हरिश्रय ककविन तथा 3.अर्जुनविजय।

जावा में रामकथा पर आश्रित नाटकों की परम्परा भी रही है, जो अत्यन्त लोकप्रिय है।

कम्बोडिया में अनेक मन्दिर उपलब्ध होते हैं इसकी प्राचीन राजधानी अंगकोर वाट (नगर मन्दिर) के विशाल मन्दिर में रामायण कथओं के पाषाण चित्र अंकित हैं। कम्बोडिया के साहित्य में रामकथा रामकेर्ति के नाम से विख्यात है। रामकेर्ति वाल्मीकि के सन्निकट दिखाई देती है।

थाईलैण्ड में रामकथा रामकियेन के नाम से जानी जाती है। रोचक बात यह है कि यहाँ प्राचीन नाट्य का वर्ण्य विषय रामकथा हुआ करती थी। छाया नाटक भी राम कियेन पर आधारित है। रामकियेन के सभी पात्र श्याम देश(थाईलैण्ड) के ही निवासी है तथा घटनाएँ भी वहीं की हैं। 16वीं शती में भी रामजातक की रचना लाओं भाषा में की गई है। [12] लाओस में भी राम कथा उपलब्ध है।

इसके अलावे पश्चिमी जगत् में भी रामकथा के भ्रमण की कहानी कम रोचक नहीं है। 15वीं शती में आए पश्चिमी यात्रियों तथा मिशनरियों के ग्रन्थों द्वारा यह कथा यूरोप में पहुँची। डच, फ्रेंच, पोर्चुगीज और अंग्रेजी में राम कथा संक्षेप में वर्णित है। यह कथा यात्रावृन्तातों में अपना स्थान बना पायी और इसी माध्यम से यूरोपवासियों के पास पहुँची।

राम–कथा का प्रसार रामचरितमानस के माध्यम से भी बहुत अधिक हुआ। अंग्रेज हमारे यहाँ से मजदूरों को सूरीनाम, मॉरिशस, फिजी, गुयाना देश ले गए। ये मजदूर अपने साथ रामचरितमानस के दोहे ले गए। मजदूर बड़ी कठिन परिस्थितियों में इन देशों में पहुँचे लेकिन कठिन काम को निपटाने के बाद वे रामचरितमानस के दोहों को गाते। आज ये मजदूर वर्ग अपनी स्थितियों पर विजय प्राप्त कर समृद्ध हुए, आज भी इन देशों में रामचरितमानस के दोहे लोकप्रिय हैं। आज भी इन देशों में हनुमान की पताका दिखाई देती है।

राम–कथा हमारे देश की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं वैश्विक मूल्यों का आधान स्थल है। नैतिक मूल्यों एवं आदर्श सिद्धान्तों की रक्षा हेतु यह कथा सदैव जन–मानस को प्रेरित करती रहेगी।

**सन्दर्भ**


1. वाल्मीकि रामायण– 2/2/29
2. अद्भूत रामायण– 1/19
3. आनन्द रामायण (जन्मकाण्ड)– 5/8
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास– आचार्य बलदेव उपाध्याय, पृ. –49
5. रामचरितमानस– 7/19 ग/4
6. गोस्वामी तुलसीदास– रामजी तिवारी, पृ.–114
7. प्रसन्नराघव एवं रामचरितमानस–एक सम्यक दृष्टि– डॉ. मोना बाला, पृ.–48–49
8. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास– पं. रामनाथ त्रिपाठी, पृ.–282
9. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास– पं. रामनाथ त्रिपाठी, पृ.–281
10. संस्कृत साहित्य का इतिहास– आचार्य बलदेव उपाध्याय – पृ. –53
11. संस्कृत साहित्य का इतिहास– आचार्य बलदेव उपाध्याय – पृ. –54
12. संस्कृत साहित्य का इतिहास– आचार्य बलदेव उपाध्याय पृ..– 56
13. रामायण– महर्षि वाल्मीकि, गीता प्रेस
14. रामचरितमानस– गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस
15. गोस्वामी तुलसीदास– आचार्य रामजी तिवारी, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली
16. अद्भुत रामायण– भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ
17. प्रसन्नराघव एवं रामचरितमानस–एक सम्यक् दृष्टि– डॉ.मोना बाला, नोवेल्टी एण्ड कम्पनी, पटना
18. वाल्मीकि– इलपावुलूरि पाण्डुरैंराव, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
19. संस्कृत साहित्य का इतिहास– आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी
20. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास– डॉ नगेन्द्र(सं.), हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय
21. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास– डॉ कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायणलाल विजयकुमार, इलाहाबाद